नाड़ी ज्योतिष

भाग 1 (हिंदी संस्करण)

Astrological Researches Group

With

जितेन्द्र कुमार

आदरणीय ज्योतिष मित्रों को सम्मान!

मैं जितेंद्र कुमार आप सभी का नाड़ी-ज्योतिष में हार्दिक स्वागत करता हूँ और "नाड़ी ज्योतिष, भाग 1 (ई-बुक संस्करण ~ हिंदी संस्करण, अगस्त 2017)" के माध्यम से नाड़ी-ज्योतिष के विषय में अपने शोधात्मक विचार आप सभी के समक्ष प्रस्तुत कर रहा हूँ। यह पुस्तक मैं अपने दादा-दादी (स्वर्गीय) श्रीमती भोली देवी और श्री ओम प्रकाश शर्मा और मेरे गुरुजी पं आर डी वशिष्ठ (सेवानिवृत्त कार्यकारी-अभियंता) को समर्पित करता हूँ।

प्रूफ रीडिंग में सहयोग और अन्य विशिष्ट सुझावों के लिए मैं श्री मुकेश शर्मा जी और अन्य मित्रों का विशेषत: आभारी हूँ।

यदि इस पुस्तक में कोई त्रुटि हो या आप कोई सुझाव देना चाहते है तो, आपके विचारों का सहर्ष स्वागत है।

Astrological Researches Group

नाड़ी ज्योतिष:

ज्योतिष-शास्त्र हिंदू-संस्कृति का अभिन्न अंग है। जब हम ज्योतिष के बारे में बात करते हैं, जन्मकुंडली का विचार स्वत: मन में आ जाता है। जन्म कुंडली गणना/निर्माण और उसके विश्लेषण हेतु ज्योतिष-शास्त्र के दो महत्वपूर्ण विभाग हैं। कुंडली निर्माण में आवश्यक गणितीय गणनाओं के साथ खगोल-विज्ञान और भूगोल भी शामिल है। जबकि, कुंडली-विश्लेषण हेतु अत्यंत प्रभावशाली प्रणालियां और सूत्र भी उपलब्ध हैं।

कुंडली विश्लेषण में "पाराशरी", "जैमिनी", "नाड़ी" और "के. पी." आदि अनेक की तरह अलग-अलग अत्यंत प्रभावशाली प्रणालियां हैं। नाड़ी-ज्योतिष में पुनः भृगु, ध्रुव, सप्तर्षि, वशिष्ठ, चंद्र कला और नंदी नाड़ी आदि जैसे उच्च कोटि के ग्रन्थ उपलब्ध है। प्रत्येक नाड़ी-ग्रन्थ/अनुशासन के अपने कुछ मौलिक सिद्धांत है।

इस पुस्तक में, मैं भृगु-नाड़ी, नंदी-नाड़ी, सप्तर्षि-नाड़ी, चंद्र-कला नाड़ी, मीन-नाडी आदि के आधार पर अपने अध्ययन, विचारों और अनुभवों को साँझा करने का प्रयास कर रहा हूं। मुझे उम्मीद है, कि यह प्रयास ज्योतिष-शोधार्थियों, छात्रों और ज्योतिषियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

यदि आपके पास वास्तविक तकनीकी प्रश्न हैं, तो मैं जवाब देने के लिए अपनी पूरी कोशिश करूँगा, लेकिन मैं इस संबंध में कोई प्रतिज्ञा नहीं कर सकता। इसके अलावा, व्यक्तिगत प्रश्नों पर विचार नहीं किया जाएगा।

जितेंद्र कुमार

मोबाइल न. : +91 81780 36134

ईमेल आईडी: nadiresearcher@gmail.com

Astrological Researches Group (Face Book)

दिनांक: 11 अगस्त, 2017

Preface		
क्रमांक	**विषय**	पृष्ठ संख्या
1.	नाड़ी-ज्योतिष कैसे सीखें ?	5
2.	नाड़ी ज्योतिष को समझने और उपयोग करने हेतु प्रमुख चरण	7
3.	अध्याय: 1 ~ नव-ग्रहों के कारकत्व	10
4.	अध्याय: 2 ~ राशियाँ और उनके उनके द्वारा अधिष्ठित दिशायें।	12
5.	अध्याय: 3 ~ दृष्टि और युति-सम्बन्ध	15
6.	अध्याय: 4 ~ वक्रत्व (Retrogression) ©	22
7.	अध्याय: 5 ~ राशि-परिवर्तन (Sign EXchange) ©	25
8.	अध्याय: 6 ~ प्रगति (प्रोग्रेशन - Progression) ©	32
9.	अध्याय: 7 ~ शनि का प्रोग्रेशन (Saturnine Progression) ©	36
10.	अध्याय: 8 ~ राहु का प्रोग्रेशन ©	39
11.	अध्याय: 8 ~ केतु ग्रह का प्रोग्रेशन ©	42
12.	कुछ उपयोगी लिंक	45
13.	आने वाले प्रकाशनों में निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा	46

नाड़ी-ज्योतिष कैसे सीखें ?

ज्योतिष विषय में पाराशरी, जैमिनी, के.पी., नाड़ी आदि जैसी विभिन्न विचार-धाराएं हैं। जहां प्रत्येक विचार-धारा अपने आप में विशिष्ट है, लेकिन सभी का अंतिम लक्ष्य/गंतव्य अधिकतम सटीकता के साथ विश्लेषण करना है। ज्योतिष-विषय में नाड़ी-ज्योतिष सबसे पुरानी विचारधाराओं में से एक है, जिसकी पुनः कई शाखाएं हैं, जहां प्रत्येक शाखा एक विशिष्ट कार्यप्रणाली से संबंधित है।

हमारे इस विचार-विमर्श का मुख्य आधार मुख्यत: सप्तर्षि-नाड़ी, भृगु-नंदी-नाड़ी, मीन-नाड़ी आदि ग्रन्थ है। मीन नाड़ी मुख्यत: नवांश -पद्धति पर आधारित है, जबकि नंदी नाड़ी, सप्तर्षि नाड़ी और भृगु-नंदी-नाड़ी मुख्यत: “ग्रहों के कारकत्व” के अनुसार फलित पर आधारित हैं।

कुछ बुनियादी प्रश्नों को ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. अयनांश: कौन से एक अयनांश का पालन किया जाना चाहिए?

वर्तमान में, मैं किसी भी भ्रम से बचने के लिए लाहिड़ी अयनांश का उपयोग करने की सलाह दे रहा हूं। वरिष्ठ-छात्र "सूर्य सिद्धांत" के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं। ग्रहों की स्थिति भूकेंद्रित और मध्यम राहु-केतु का इस्तेमाल किया जाना चाहिए। वरिष्ठ छात्र अन्य विकल्पों के साथ भी प्रयोग कर सकते हैं।

2. मीन-नाड़ी के लिए, पुस्तक के अनुसार नवांश-विधि और अन्य नियमों का पालन करना चाहिए। बाद में, वरिष्ठ-छात्र अन्य तरीकों से प्रयोग कर सकते हैं।

3. भृगु-नंदी-नाड़ी और संबंधित ग्रंथों (जैसा कि स्वर्गीय श्री आर. जी. राव द्वारा उपलब्ध कराया गया है) नए छात्रों के लिए पर्याप्त हैं। भृगु-नंदी-नाड़ी में, प्रत्येक "ग्रह के कारकत्व" को अत्यंत महत्त्व दिया जाता है। इसके अलावा, "प्रगति (प्रोग्रेशन)~Progression" और कुछ अतिरिक्त नियम ... जो कि मौलिक नियम हैं ... को मैं शिक्षार्थियों के साथ मेरी चर्चा में (पीडीएफ फ़ाइलें, ऑडियो और वीडियो व्याख्यान) पहले से ही साँझा करता आ रहा हूँ।

4. सप्तर्षि-नाड़ी भृगु-नंदी- नाड़ी के समान है, लेकिन सप्तर्षि- नाड़ी के अंतर्गत भावों को भी महत्व दिया गया है।

5. नाड़ी-ज्योतिष मे सिद्धांततः प्रत्येक ग्रह की जन्मकालिक स्थिति~ राशि/अंश-कला आदि उपयोग किया जाता है।

6. भृगु-नंदी-नाड़ी से सम्बन्धित ग्रंथों में "लग्न" को अत्यधिक महत्व नहीं दिया जाता है। इसका अपना तर्क है, जिस पर मैं बाद में विस्तार से चर्चा करूंगा। एक बात मैं यह स्पष्ट करना चाहूंगा कि इसका अर्थ यह नहीं है कि "लग्न" का कोई महत्व नहीं है। अग्रिम स्तर पर और नाड़ी ज्योतिष को समझने के लिए और कुंडली के निर्माण करने के लिए "लग्न" की आवश्यकता और अपना विशिष्ट महत्व है।

7. विंशोत्तरी दशा प्रणाली का उपयोग पाराशरी, जैमिनी और के. पी. आदि परम्परा में सर्वविदित है। विंशोत्तरी दशा प्रणाली ही "प्रगति~Progression" का ही एक प्रकार है, जहां जन्मकालिक चंद्रमा की नक्षत्र-विशेष में उपस्थिति के अनुसार विशिष्ट-गणितीय प्रकिया के तहत चन्द्रमा का "प्रोग्रेशन" किया जाता है। नाडी ज्योतिष में, इसी तरह ग्रहों का प्रोग्रेशन किया जाता है।

8. मेरी चर्चा में, मैं हमेशा नाड़ी-ज्योतिष को किसी ऐसे व्यक्ति से व्यवस्थित तरीके से सीखने का सुझाव देता हूं, जो नाड़ी -ज्योतिष में शोधकर्ता हो।

9. नाड़ी ज्योतिष के सही उपयोग कैसे करें ?

इस प्रश्न के उत्तर में मेरा विचार है~ नाड़ी ज्योतिष को स्वतंत्र रूप से और अन्य पद्धितियों के साथ भी सम्मिलित करके भी उपयोग किया जा सकता है।

Astrological Researches Group

नाड़ी ज्योतिष को समझने और उपयोग करने हेतु प्रमुख चरण

सबसे पहले, नाड़ी-ज्योतिष की कौन सी शाखा और शाखा-विशेष के आधार पर विश्लेषण हेतु आवश्यक "अनुशासन / नियम" पर ध्यान दें। जैसे, मैं सप्तर्षि-नाड़ी, भृगु-नंदी-नाड़ी, मीन-नाड़ी आदि का अनुसरण कर रहा हूं, जहां:

• मीन-नाड़ी नवांश-पद्धति पर आधारित है जबकि,

• सप्तर्षि नाड़ी और भृगु नंदी नाड़ी मूलत: ग्रहों के कारकत्व पर आधारित है।

पाराशरी सिद्धांत के अनुसार प्रचलित विधि अनुसार कुंडली (मुख्यत: लग्न कुंडली) और प्रत्येक ग्रह से सम्ब्रधित निम्न लिखित जानकारी नोट करें:

• भाव/राशि/नक्षत्र/अंशादि को नोट करें:

• प्रत्येक ग्रह गति की दशा (Direction & Condition): जैसे मार्गी, वक्री (Retrograde) या स्थिर (Stationary)

• गति (Speed) (दूसरे ग्रहों की तुलना में)

• अस्त (Combust) है या नहीं,

• ग्रह-विशेष के त्रिकोण (Trine)(राशि/भाव) में उपस्थित अन्य ग्रह,

• विपक्ष (सप्तम /भाव राशि~ in Opposite) में ग्रह,

• ग्रहों के मध्य की दूरी (Distance between Planets),

• ग्रहों के म्युचुअल प्लेसमेंट (पारस्परिक स्थिति~ Mutual Placement),

• अन्य ग्रहों से युति (in Conjunction with other Planet/s),

• नाडी पद्धति के अनुसार प्रत्येक ग्रह द्वारा अधिष्ठित राशि की दिशा की जानकारी आदि।

नोट: पिछले चरण को समझने के बिना, अगले चरण पर न जाएं।

अब, सभी ग्रहों को उनके द्वारा जन्मकालिक अधिष्ठित राशि के अनुसार संबंधित दिशाओं में व्यवस्थित करें। कुंडली (चार्ट) के विश्लेषण के लिए "प्रोग्रेशन" के साथ आगे बढ़ें। इस

क्रम में सबसे से पहले जातक के लिंग (पुरुष अथवा स्त्री) के आधार पर "जीव कारक ग्रह- बृहस्पति (पुरुष जीव कारक) और शुक्र (स्त्री जीव कारक)" का निर्णय करना चाहिए। आगामी अध्यायों में, ऊपर दिए गए सभी बिंदुओं पर सहायक उदाहरणों और चार्ट के साथ विस्तृत चर्चा की जाएगी।

नोटः गोचर (ट्रांजिट~Transit) को प्रोग्रेशन (Progession~ प्रगति) से आरम्भिक स्तर पर न मिलायें (मिक्स न करें), क्योंकि ये दोनों अलग-अलग अवधारणाएं हैं।

भाग - 1

नाड़ी-ज्योतिष के प्रमुख नियम

अध्याय: 1 ~ नव-ग्रहों के कारकत्व

नाड़ी ज्योतिष में फलित विचार के दौरान ग्रहों के कारकत्व, दिशा, दृष्टि (अस्पेक्ट), वक्रत्व (Retrogression), राशि-परिवर्तन (साइन एक्सचेंज), प्रोग्रेशन और गोचर (Transit ~ पारगमन) आदि जैसे कुछ नियम / स्वभाव सिद्धांतों का पालन/उपयोग करते हैं।

इसके अलावा, कुछ मूलभूत नियमों का उल्लेख किया गया है, मैं इस अध्याय में अपने विचारों को साँझा (शेयर) करता हूं।

प्रत्येक ग्रह की कुछ मौलिक विशेषताएं/गुण होते हैं, जो मानवीय संबंधी विषयों को "कर्म-सिद्धांत" के तहत प्रभावित करते हैं। प्रत्येक ग्रह की विशेषताएं/गुण उस ग्रह से संबंधित प्राथमिक, पौराणिक, ज्योतिषीय और खगोलीय विचारों पर अधिक निर्भर हैं। प्रत्येक ग्रह के अपनी विशिष्टताओं/गुणों या प्राथमिक प्रकृति के आधार पर कुछ निश्चित कारकत्व निर्धारित किये गये है। नाड़ी ज्योतिष में प्रत्येक ग्रह के कारकत्वों के ज्ञान के बिना आगे बढ़ना मुश्किल है।

उदाहरण के लिए: जुड़वां जन्म के मामले में, दोनों जातकों की कुंडली लगभग एक-समान होती है, इस कारण फलित विचार में मुश्किल होती है। लेकिन, यदि ग्रहों के कारकत्व के आधार पर दोनों जातकों के लिए विचार करते हैं, तो दोनों जातकों की जन्मकुंडली का अलग-अलग विश्लेषण करना बहुत आसान हो जाता है। यदि जुड़वां-जन्म के अंतर्गत दोनों जातक पुरुष है, तो ऐसी स्थिति में "बृहस्पति ग्रह" जीव-कारक माना जाता है, लेकिन बड़े जातक और छोटे जातक के जन्म/जन्मकुंडली के बीच अंतर करने के लिए, हम इस प्रकार विचार करते हैं:

• बड़े जातक के लिए: बृहस्पति (जीव-कारक अर्थात् जीवन) + शनि (बड़े भाई का कारक)।

• छोटे जातक के लिए: बृहस्पति (जीव-कारक अर्थात् जीवन) + मंगल (छोटे भाई का कारक) ।

ग्रहों के कारकत्व के अनुसार संबंधित मानवीय रिश्ते/संबंधी निम्नानुसार है:

1. सूर्य: पिता, पुत्र (प्रथम पुत्र), ससुर।

2. चन्द्रमा: मां, बड़ी बहन, बड़ी साली, सास, मामा की पत्नी, मां के रिश्तेदार, तीसरी पत्नी

3. मंगल: पति (स्त्री जातक के मामले में), भाई (द्वितीय), दूसरा पुत्र, साला, चाचा, दामाद, सभी पैतृकपक्ष सम्बन्धी संबंध।

4. बुध*: दूसरी पत्नी, युवा भाई (तीसरा), युवा बहन, मित्र, करीबी मित्र, प्रेमी/प्रेमिका, मामा, सबसे छोटी पुत्री।

5. बृहपति: पुरुष जातक के लिए बृहस्पति जीवन कारक है (अर्थात् स्वयं), गुरु, गाइड, प्रतिष्ठित व्यक्ति, दूसरा पति।

6. शुक्र: स्त्री-जातक के लिए जीव-कारक ग्रह है, पत्नी, बेटी, बड़ी बहन (स्वयं से बड़ी), बड़ी बेटी, बड़ी पुत्र-वधु।

7. शनि: बड़ा भाई, पिताजी के बड़े भाई, दास/नौकर, तीसरा पति।

8. राहु: दादा, पोता, पितृ (पैतृक)।

9. केतु: नाना, पितृ (मातृ पक्ष)।

* बुध को नपुंसक ग्रह के रूप में जाना जाता है या बेहतर अर्थ में बुध को "द्विलिंग" माना जाना चाहिए। यहाँ जन्मकालिक बुध जिस राशि-विशेष में उपस्थित हो, उस राशि के (लिंग~पुरुष/स्त्री) अनुसार गुण-धर्म को भी अपनाता है, जैसे स्त्री-राशि में स्त्री कारक और पुरुष-राशि में पुरुष कारक। सूर्य के बिना बुध (यानी अस्त न हो तो) महिला के रूप में कार्य करता है! सूर्य से बुध यदि 14 डिग्री की श्रेणी के भीतर हो, तो ऐसी स्थिति में बुध ग्रह को अस्त माना जाता है।

अध्याय: 2 ~ राशियाँ और उनके उनके द्वारा अधिष्ठित दिशायें।

नीचे दिए गए चित्र के अनुसार, प्रत्येक राशि (Sign) की एक विशेष दिशा निर्धारित की गई है। दिशाएं ग्रहों को सामूहिक रूप एकत्र करने और दिशा-विशेष के अनुसार ग्रहों के संयुक्त प्रभाव के विश्लेषण करने के लिए बारह राशियों को 4 दिशाओं में निम्नानुसार समूहबद्ध किया गया है:

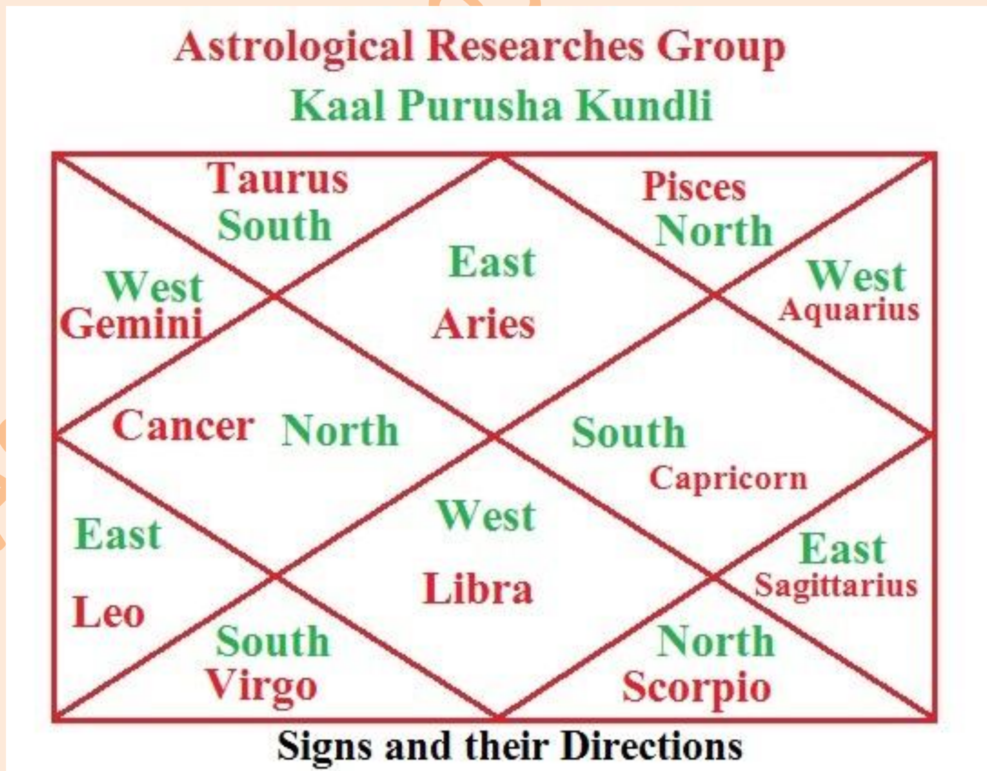
पूर्व दिशा: मेष, सिंह और धनु

दक्षिण दिशा: वृषभ, कन्या और मकर

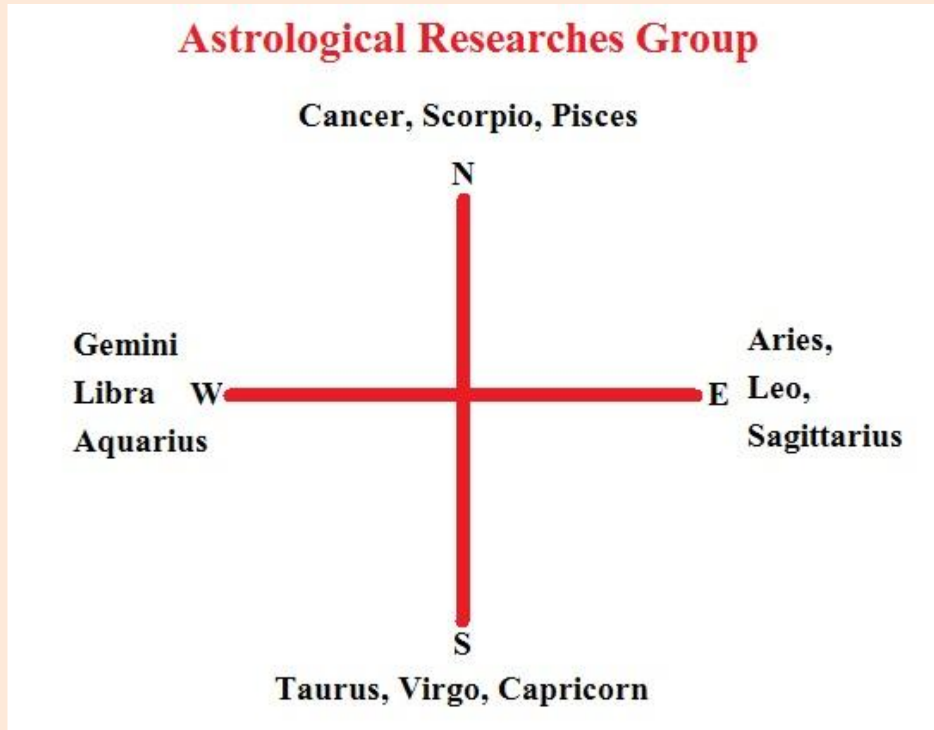
पश्चिम दिशा: मिथुन, तुला और कुंभ राशि

उत्तर दिशा: कर्क, वृश्चिक और मीन

उदाहरण चार्ट: 1



उदाहरण: चार्ट 2



नाड़ी- ज्योतिष के नियमों के अनुसार ग्रहों की युति के प्रभाव का विश्लेषण करने के लिए चार्ट- दो के अनुसार सभी ग्रहों को अधिष्ठित-दिशा अनुसार व्यवस्थित करें। इससे ग्रहों के आपसी प्रभाव को आसानी से समझने में आसानी होती हैं। एक ही दिशा (अर्थात परस्पर त्रिकोणस्थ) में उपस्थित ग्रह एक दूसरे को 75% तक प्रभावित कर सकते हैं, क्योंकि वे समान प्रकृति साँझा करते हैं। परस्पर त्रिकोणस्थ ग्रह एक-दूसरे को 100% क्यों नहीं? आगामी प्रकाशनों में इस विषय पर ओर अधिक विस्तार से विचार साँझा किये जायँगे।

१२ राशियों का लिंग (स्त्री/पुरुष) के आधार पर वर्गीकरण:

श्री आर. जी. राव के अनुसार, १२ राशियों को लिंग (स्त्री/पुरुष) के अनुसार उस इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:

* पुरुष राशियां: मेष, वृश्चिक, सिंह, धनु, मकर और मीन।

* स्त्री राशियां: वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या, तुला और कुंभ*।

पुरुष-राशियों के सामने वाली (सप्तम राशि) राशियों को स्त्री-राशि माना जाता है। इसका फलित में महत्वपूर्ण उपयोग होता है।

सूर्य, मंगल, बृहस्पति और शनि*~ इन चार ग्रहों को पुरुष-ग्रह माना जाता है।

शुक्र, चन्द्रमा, और बुध ~ इन तीनों ग्रहों को स्त्री-ग्रहों के रूप में माना जाता है।

इसके अलावा, पुरुष और महिला ग्रहों को छोड़कर (यानी पुरुष~ सूर्य, मंगल और बृहस्पति और स्त्री~ शुक्र), अन्य ग्रहों ~ शनि, बुध, चंद्रमा, राहु और केतु यदि राशि में अकेले उपस्थिति हो तो, तात्कालिक रूप में स्त्री कारक माने जाते है, लेकिन प्रोग्रेशन-चक्र के अनुसार गुण-धर्म में परिवर्तन भी आता है।

ध्यान दें:

सिंह राशि (सूर्य ~ पुरुष) ~ कुंभ (शनि ~ पुरुष) तो, संतान का जन्म कैसे हो सकता है? सूर्य और शनि - दोनों में से कौन स्त्री होगी? यहां, कुंभ राशि एक खाली "कुम्भ" (मटका) का प्रतीक है! खाली मटके के अंदर अंधकार माना जाता है। मटके के अंदर का अंधेरा (या "छाया" अर्थात सूर्य की दूसरी पत्नी) है। शनि का जन्म सूर्य और छाया के संयोग से हुआ था।

कुंभ राशि को सशर्त स्त्री राशि के रूप में माना जाता है।

कर्क - मकर के मामले में, चंद्रमा को देवी पार्वती और शनि को भगवान शिव के रूप में माना जाता है।

इसके अलावा, पांच स्त्री राशियां को ~ वृषभ, मिथुन, कर्क, कन्या और तुला के रूप में "पंचकन्या" कहा जाता है।

अध्याय: 3 ~ दृष्टि और युति-सम्बन्ध

ज्योतिष में फलित विचार हेतु अनेक प्रकार के सिद्धांत प्रचलित है, जहां प्रत्येक सिद्धांत/विद्यालय कुछ निश्चित नियमों का पालन करता है। ग्रह एक-दूसरे पर कैसे प्रभाव डालते हैं? यह फलित-ज्योतिष का प्रमुख विषय और उद्देश्य होता है, जिसे समझने के लिए प्रमुख सिद्धांत इस प्रकार है:

१. दृष्टि

२. युति

३. पारस्परिक-उपस्थिति

नाडी ज्योतिष में, "दृष्टि और युति" महत्वपूर्ण सिद्धांत है। ग्रहों की युति को अधिक प्रभावी रूप से समझने हेतु ग्रहों की पारस्परिक-उपस्थिति (म्यूच्यूअल-प्लेसमेंट) का विशेष महत्व होता है, जोकि कुंडली में ग्रहों की प्रभाव क्षमता और बल को समझने हेतु आवश्यक है।

सभी 12 राशियां एक दूसरे से श्रंखला (Closed Chain) के रूप में जुड़ी हुई है, जैसा कि नीचे चार्ट में दिखाया गया है। इसके अलावा, इन 12 राशियों को दिशाओं (Directions) के आधार पर भी वर्गीकृत किया गया है।

"ग्रहों की परस्पर उपस्थिति के साथ-साथ उनके द्वारा जन्मकालिक अधिष्ठित-राशि की दिशा और ग्रह की गति की दिशा (मार्गी, वक्री और स्थिर)... ऐसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है, जो कि ग्रहों के एक - दूसरे पर प्रभाव का विश्लेषण करने की आवश्यकता है"।

4. ग्रहों की परस्पर-उपस्थिति को फलित दृष्टिकोण से ओर अधिक विस्तार से समझना आवश्यक है. इस हेतु विचारणीय कुछ प्रमुख अन्य नियम इस प्रकार है:

1. निकटवर्ती भाव/राशियां

2. सातवें भाव/राशि में उपस्थित ग्रह

3. राशि परिवर्तन

4. त्रिकोण भाव/राशियां

5. षडष्टक* (परस्पर छठा-आठवां भाव/राशियां)

*षडष्टक-सम्बन्ध नाड़ी ज्योतिष की एक सीधी विशेषता नहीं है। लेकिन, यह फलित के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण और विचारणीय है।

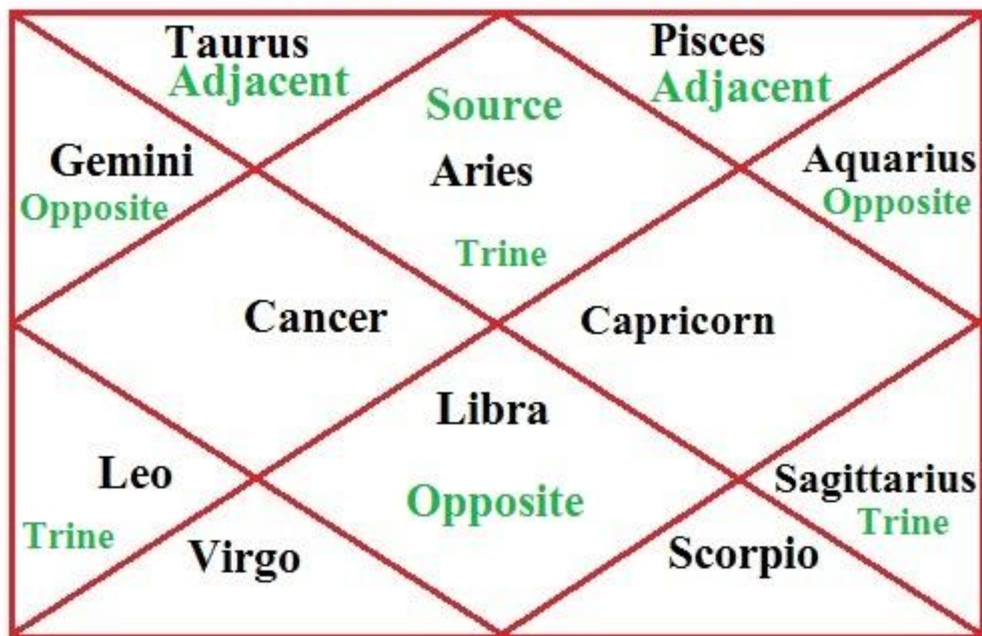
Astrological Researches Group

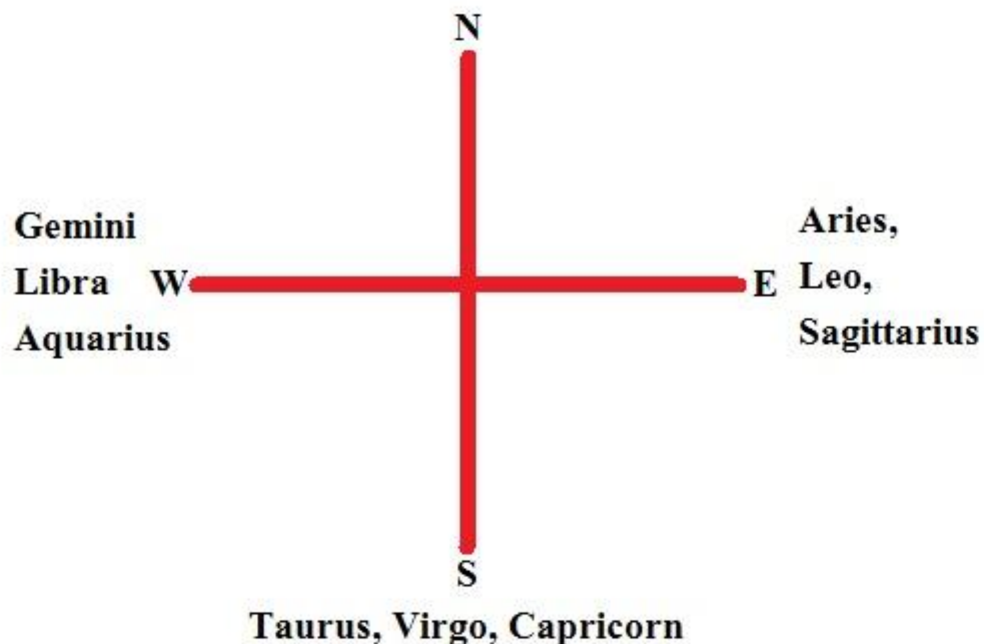
E S

N	12th Pisces Adjacent	1st Aries (Source Planet)	2nd Taurus Adjacent	3rd Gemini Side	W
W	11th Aquarius Side	Aspect acts as a Catalyst which either Boon the qualities of aspected planet or bane the qualities of aspected planet		Cancer	N
S	Capricorn			5th Leo	E
E	9th Sagittarius	Scorpio	7th Libra Opposite	Virgo	S

N W

Signs & their Directions

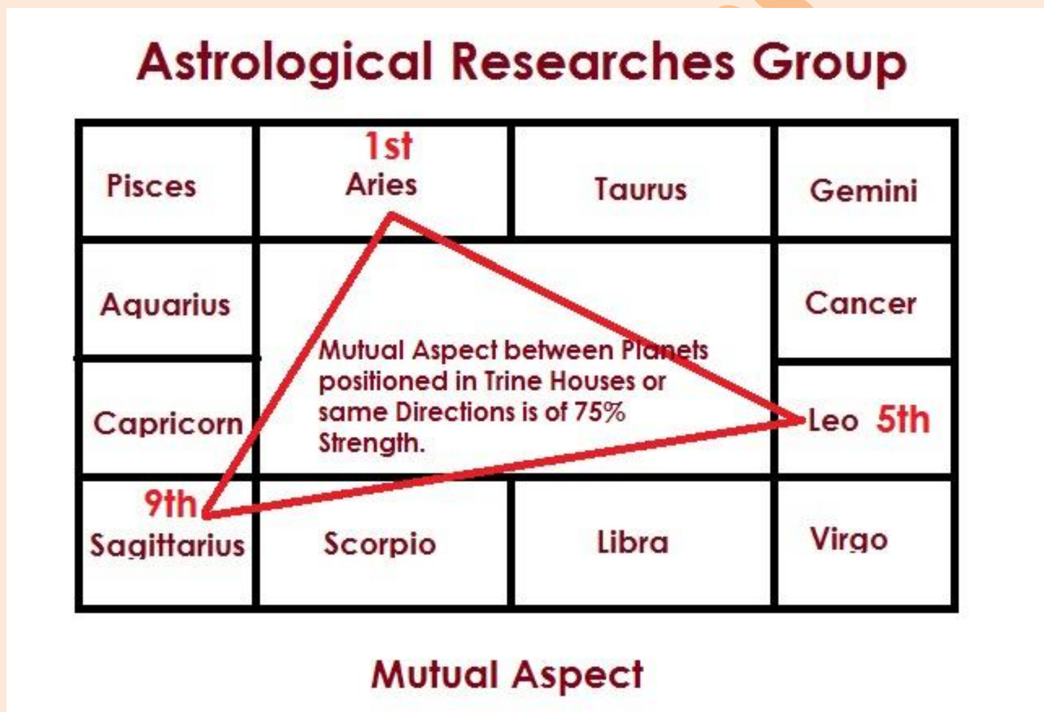

Astrological Researches Group
Mutual Placement
Taurus
Adjacent
Source
Pisces
Adjacent
Gemini
Opposite
Aries
Aquarius
Opposite
Trine
Cancer
Capricorn
Libra
Leo
Trine
Opposite
Sagittarius
Trine
Virgo
Scorpio


Astrological Researches Group
Cancer, Scorpio, Pisces
N
Gemini
Libra
Aquarius
W
E
Aries,
Leo,
Sagittarius
S
Taurus, Virgo, Capricorn

सभी ग्रहों के आपसी प्रभाव को आसानी से समझने हेतु, लग्न-कुंडली में उपस्थित ग्रहों को चित्र 2 के अनुसार सम्बंधित दिशाओं में व्यवस्थित करें।

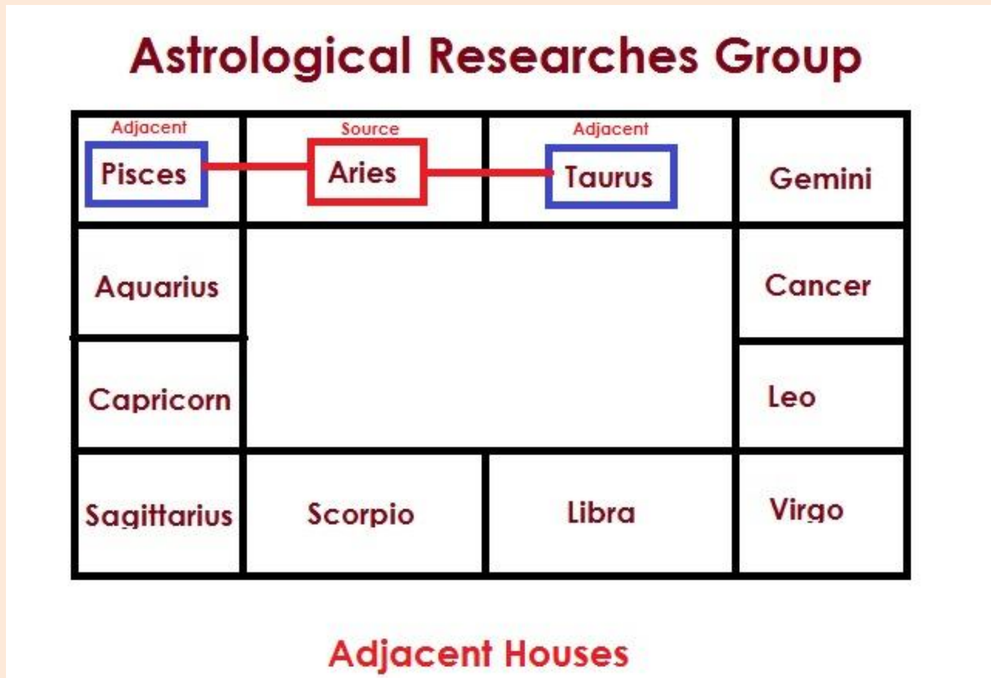
नियम 1: ग्रह एक-दूसरे को "परस्पर-उपस्थिति (म्यूचुअल प्लेसमेंट") के माध्यम से एक दूसरे को प्रभावित करते हैं. ग्रहों की "परस्पर-उपस्थिति (म्युचुअल प्लेसमेंट)" और इसके प्रभाव का विचार "युति सम्बन्ध और दृष्टि सम्बन्ध" के माध्यम से किया जाता है।

1 (a): परस्पर त्रिकोण राशियां एक ही दिशा और तत्त्व का प्रतिनिधित्व करती है। एक ही राशि में उपस्थित दो ग्रह एक-दूसरे को 100% तक प्रभावित कर सकते है, जबकि त्रिकोण-राशियों/भावों में उपस्थित ग्रह एक-दूसरे को अधिकतम 75% तक प्रभावित कर सकते है।



- पूर्व ~ मेष, सिंह और धनु
- दक्षिण ~ वृषभ, कन्या और मकर
- वेस्ट ~ मिथुन, तुला और कुंभ
- उत्तर ~ कर्क, वृश्चिक और मीन
- विश्लेषण हेतु "दिशा" के आधार पर ग्रहों को व्यवस्थित चाहिए।
- वक्री ग्रहों के संदर्भ में अलग से चर्चा की जाएगी।

1 1 (b): निकटवर्ती भावों में उपस्थित ग्रह एक-दूसरे को नीचे चित्र में दिखाए अनुसार प्रभावित करते हैं:

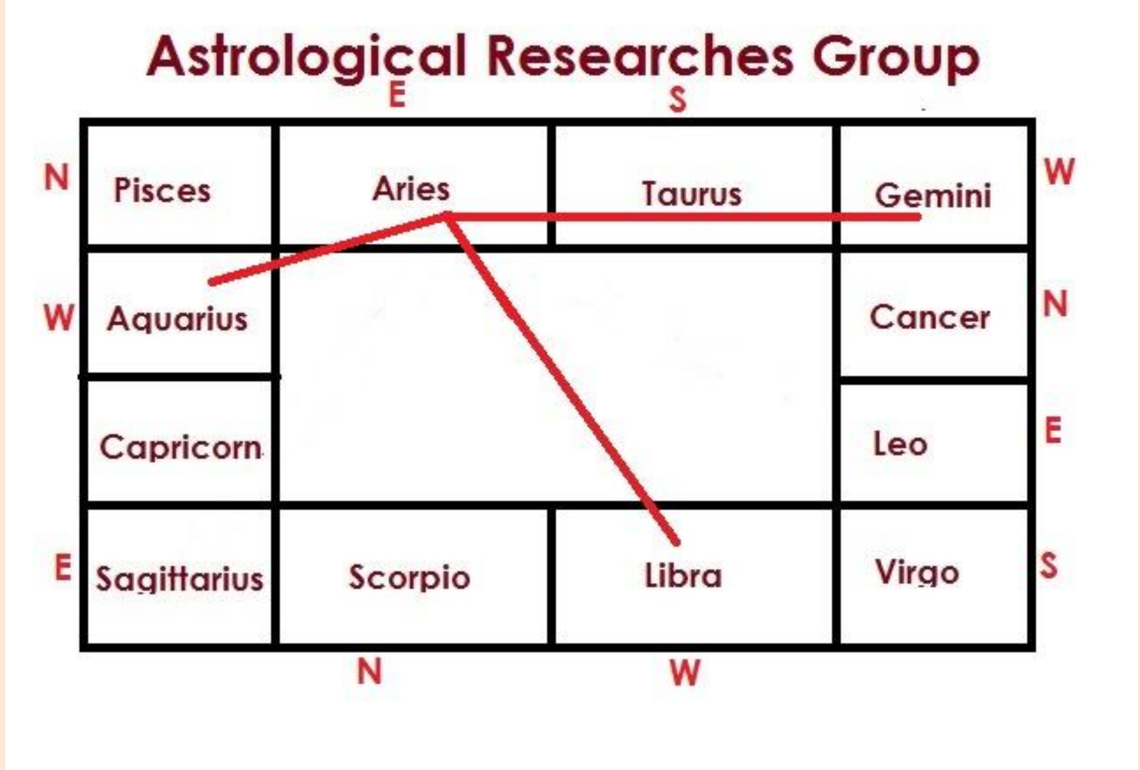


निकटवर्ती भावों/राशियों में उपस्थित ग्रहों का एक-दूसरे पर या अगले भाव/राशि पर अपना प्रभाव ग्रहों की गति की दिशा (Direction of Motion) और अधिष्ठित-राशि की दिशा (Sign's Direction) पर निर्भर करता हैं। ग्रह अधिष्ठित-राशि की दिशा और गति की दिशा के ज्ञान के बिना फलित-विचार/विश्लेषण गलत हो सकता है। वैश्विक-ज्योतिष में दिशा और गति की महत्वपूर्ण भूमिका है।

स्थिर ग्रह ~ जब एक ग्रह अपनी दिशा बदलता है अर्थात मार्गी या वक्री होने के दौरान कुछ समयावधि के लिए स्थिर प्रतीत होता है.... ऐसी स्थिति में उस ग्रह को स्थिर-ग्रह कहा जाता है। विचारणीय ग्रह की जन्मकुंडली में "गति के अनुसार स्थिति ~ मार्गी, वक्री अथवा स्थिर" ... विचारणीय ग्रह की प्रभाव क्षमता के आकलन के लिए एक प्रमुख कारक भी होती है।
स्मरण रखें~ सूर्य और चंद्र सदैव मार्गी ही रहते है तथा राहु और केतु सदैव वक्री ही रहते है। इसलिए "गति के अनुसार स्थिति ~ मार्गी, वक्री अथवा स्थिर"... केवल बुध, शुक्र, मंगल, गुरु और शनि के लिए ही विचारणीय होती है।

2 1 (c): विचारणीय भाव/राशि से 7 वें भाव/राशि में उपस्थित ग्रह (और 7 वें भाव/राशि के त्रिकोण में उपस्थित ग्रह भी) विचारणीय भाव/राशि में उपस्थित ग्रह

को लगभग 50% तक प्रभावित कर सकते है। वस्तुत: उपरोक्त स्थिति के ग्रह “सजगता” कारक होते है। यह सजगता (Alertness) लाभदायक या हानि कारक भी हो सकती है, जिसका आधार ग्रहों के परस्पर मैत्री/शत्रुता आदि सम्बन्ध होता है।



<u>नियम 2: ग्रहों की परस्पर-उपस्थिति (Mutual Placement), युति (Conjunction) और दृष्टि (Aspect) की ~ "प्रभाव क्षमता और उपयुक्तता", विचारणीय ग्रह/ग्रहों की गति (Speed) और गति की दिशा (Direction of Motion) पर निर्भर करती हैं।</u>

- 2 (a): एक भाव/राशि में दो या अधिक ग्रहों की उपस्थिति को "ग्रह-युति (Planetary Conjunction)" कहा जाता है. दोनों ग्रह 75% से 100% प्रभाव क्षमता के साथ एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। हालांकि, सामान्य तौर पर, प्रभाव क्षमता को 100% माना जाता है।
- 2 (b): एक ही दिशा में उपस्थित एक से अधिक ग्रह (परस्पर त्रिकोणस्थ-राशि आधारित) को "त्रिकोणस्थ-ग्रह-समूह (Trine Planets)" कहा जाता है और ये ग्रह एक दूसरे को 75% प्रभाव क्षमता के साथ एक दूसरे को प्रभावित करते है।

- 3 (c): विचारणीय ग्रह से विपरीत दिशा अर्थात् सातवें भाव/राशि में उपस्थित ग्रह/ग्रहों (और उपरोक्त 7वें भाव के त्रिकोणस्थ अन्य भावों/राशियों~ 3रें और 11वें भाव में उपस्थित अन्य ग्रह) को "विपरीत दिशा/राशिस्थ ग्रह" कहा जाता है और विचारणीय ग्रह और "विपरीत दिशा/राशिस्थ ग्रह" एक दूसरे को 50% प्रभाव क्षमता के साथ प्रभावित करते है।
- 4 (d): निकटवर्ती भावों/राशियों में उपस्थित ग्रहों को "निकटवर्ती ग्रहों (Adjacent Planets)" के रूप में जाना जाता है। ये ग्रह एक-दूसरे को 20% से 90% प्रभाव क्षमता तक प्रभावित कर सकते हैं।

- 5 (e): वक्रत्व: इस विषय पर अलग अध्याय में विस्तार से चर्चा होगी। संक्षेप में, वक्रत्व काल्पनिक (Hypothetical) रूप से ग्रह-विशेष की गति एक प्रकार की दिशा है, जिसमे ग्रह-विशेष गोचर में वक्री अर्थात विपरीत दिशा में भ्रमण करता हुआ प्रतीत होता है। जबकि खगोलीय दृष्टिकोण से, सभी ग्रह हमेशा एक दिशा में भ्रमण करते हैं।

अध्याय: 4 ~ वक्रत्व (Retrogression) ©

फलित ज्योतिष में, कुछ ऐसे विषय है जोकि बहुत विवादास्पद और उलझन भरें है। वक्रत्व (Retrogression) ~ ऐसा ही एक विषय है। खगोलीय रूप से, सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर अपने निर्धारित पथ पर एक निश्चित दिशा में आगे बढ़ते हैं। लेकिन, जब हम धरती से देखते हैं, तो दृश्यभाष (Visualization) के कारण कुछ भिन्न प्रकार से भी ग्रहों का भ्रमण देखने को मिलता है, जिसके अंतर्गत कुछ ग्रह-विशेष सूर्य से एक उचित दूरी पर आने पर वक्री भ्रमण करते प्रतीत होते है। लेकिन ग्रहों का वक्रत्व (जैसा कि धरती से देखा गया है) एक वास्तविक घटना नहीं है, लेकिन केवल एक आभासी घटना/दृश्य मात्र है, जहां वक्री-ग्रह / पीछे की तरफ भ्रमण करता प्रतीत होता है। इस अध्याय में ग्रहों की वक्रत्व स्थिति को एक नए ढंग से समझने का प्रयास किया जा रहा है।

बी.पी.एच.एस. के अनुसार:

वक्रानुवक्रा विकला मन्दा मन्दतरा समा।

चराचातिचरेति च ग्रहाणामष्टधा गतिः।।

अर्थात ~ १. वक्रा, २. अनुवक्रा, ३. विकला, ४. मन्दा, ५. मन्दतरा, ६. समा, ७. चरा और ८. अतिचरा ~ ये आठ प्रकार की गति कही गई है।

- **वक्रगति~जब ग्रह जिस राशि -विशेष में वक्री हो और वक्रत्व अवधि के दौरान उसी राशि-विशेष में रहे.**
- **अनुवक्र ~ जब ग्रह वक्रत्व अवधि के दौरान दो राशियों में भ्रमण करें.**
- **कुटिला ~ स्थिर ग्रह (गति शून्य)**

नाडी ज्योतिष में, कुंडली में उपस्थित ग्रहों की प्रभाव क्षमता को समझने हेतु "वक्रत्व (Retrogression)" को भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होती है। वक्री ग्रह के प्रभाव को समझने हेतु "वक्रत्व" के विभिन्न प्रकारों को समझना आवश्यक है।

वक्रत्व मुख्यतः तीन प्रकार का होता है:

1. एक ही राशि-विशेष में (वक्रगति)*

२. दो राशियों के मध्य वक्रत्व, अर्थात ~"अनुवक्र": जब ग्रह वक्रत्व अवधि के दौरान दो राशियों में भ्रमण करें*

3. "अनुवक्र" (दो राशियों के मध्य वक्रत्व) को पुनः दो प्रकार का माना गया है:

3 (1) जन्म/प्रश्न-कालिक वक्री ग्रह की आगे वाली राशि में उपस्थिति*।

3 (2) जन्म/प्रश्न-कालिक वक्री ग्रह की पीछे वाली राशि में उपस्थिति*।

उपरोक्त वर्णित "अनुवक्र" (दो राशियों के मध्य वक्रत्व) को दो प्रकारों को सर्वप्रथम इस पुस्तक के माध्यम से विस्तृत शोध के बाद आप सभी के समक्ष प्रस्तुत किया जा रहा है।

जन्म/प्रश्न-कुंडली में उपस्थित वक्री-ग्रह के "वक्रत्व" को अच्छे से समझने हेतु सर्वप्रथम यह जांचे कि वक्री-ग्रह:

१. वक्रत्व-अवधि के दौरान एक ही राशि-विशेष में वक्री और मार्गी होगा अथवा

2. दो राशियों के मध्य वक्री और मार्गी होगा।

उपरोक्त दोनों स्थितियों को ध्यानपूर्वक समझने हेतु पचांग की सहायता से दोनों ही मामलों में, निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान दें:

(I) @ वक्रत्व का शुरुआती बिंदु, माना "क": राशि और डिग्री (अंश-कलादि)

(Ii) @ वक्रत्व समाप्ति बिंदु, माना "ख": राशि और डिग्री (अंश-कलादि)

अब, जन्म/प्रश्न कुंडली में बिंदुओं (पॉइंट्स) "क" और "ख" के बीच में देखें की... क्या कोई जन्मकालिक ग्रह उपस्थित है? अगर ग्रह वहां उपस्थित हैं ... तो वहां उपस्थित जन्मकालिक ग्रह/ग्रहों को वक्री ग्रह के गोचर के दौरान अच्छे / बुरे परिणामों का अनुभव करने की काफी अधिक संभावना होती है।

इसके अतिरिक्त, एक अन्य अत्यंत महत्वपूर्ण जानकारी पुस्तक से माध्यम से साँझा की जा रही है, जोकि शोधकर्ता छात्रों के उपयोगी सिद्ध हो सकती है, वह है:

* जन्मकालिक वक्री ग्रह के सन्दर्भ में पंचांग के अनुसार:

(1). वक्रत्व शुरू होने की तिथि।

(2). वक्री ग्रह द्वारा जन्म के बाद पुनः (गोचर में) अपनी जन्मकालिक राशि और अंश-कलादि पर आने की तिथि।

(३). वक्री ग्रह द्वारा जन्म के बाद पुनः (गोचर में) वक्रत्व के आरम्भ-स्थल (राशि और अंश-कलादि) पर आने की तिथि। उपरोक्त तीनो "सूत्र" अत्यंत महतवपूर्ण है और इनके विषय में पुनः इतना ही लिखूंगा कि ये सूत्र "शोधकर्ता छात्रों के उपयोगी सिद्ध हो सकते है"।.

वक्री ग्रह क्या इंगित करता है?

उत्तरः वक्री ग्रह कर्मफल* के तीव्रता से निष्पादन को इंगित करता है।

"ट्रिपल ट्रांज़िट थ्योरी" के तहत भी वक्री ग्रह का अध्ययन किया जाना चाहिए, जैसा कि मेरे द्वारा लिखित शोध-पत्र: *"Triple Transits- A forbidden Predictive Tool"*, ***जोकि "Astrological Researches Group" में फेस बुक पर पोस्ट किया गया था*** :

https://www.facebook.com/download/preview/1388218624774530

- कुछ महत्वपूर्ण बिंदु:
- ग्रहों की वक्रत्व अवधि:
- सूर्य और चंद्रमा कभी वक्री नहीं होते हैं
- राहु और केतु हमेशा वक्री रहते हैं
- आंतरिक ग्रह:
- बुध ~ लगभग 22-24 दिनों की अधिकतम अवधि के लिए एक वर्ष में तीन बार वक्री हो जाता है।
- शुक्र ~ वह बुध की तुलना में कम वक्री होता है, यानी, दो वर्ष में लगभग 42 दिनों तक वक्री हो सकता है।
  बाहरी ग्रह:
- मंगल ग्रह ~ मंगल ग्रह दो साल में एक बार लगभग अढ़ाई (2½) मास अर्थात 80 दिनों के लगभग वक्री होते है।
- बृहस्पति ~ बृहस्पति ग्रह प्रत्येक वर्ष में एक बार लगभग 4 मास अर्थात 120 दिनों की अवधि के लिए वक्री होते है।
- शनि ~ शनि ग्रह प्रत्येक वर्ष लगभग साढ़े (4½) मास अर्थात 140 दिन की अवधि के लिए वक्री होते है।
- मार्गी और वक्री होने के दौरान ग्रह-विशेष की "वास्तविक-स्थिर-अवधि (Exact Stationary Duration) की जांच ध्यान से की जानी चाहिए ... जो ग्रह-विशेष के अनुसार घंटो या अधिकतम 1-2 दिन के लिए होती है।

अध्याय: 5 ~ राशि-परिवर्तन (Sign EXchange) ©

नाड़ी-ज्योतिष अपने आप में एक विशिष्ट पद्धिती है। नाड़ी-ज्योतिष में कई गुप्त मौलिक-नियम हैं, जो कि न केवल नाड़ी-ज्योतिष के महत्व को साबित कर पाए हैं, बल्कि ज्योतिष की अन्य पद्धितियों के लिए भी सहायक सिद्ध हो रहे हैं। पहले अध्यायों में, कुछ बहुत महत्वपूर्ण बुनियादी बातों पर चर्चा हुई है। इसी अध्याय के अंतर्गत मैं नाड़ी-ज्योतिष के एक और महत्वपूर्ण मौलिक नियम ~ "राशि-परिवर्तन" के सन्दर्भ में अपने शोधात्मक विचार आपके समक्ष प्रस्तुत क्र रहा हूँ।

राशि- परिवर्तन (Sign-Exchange) क्या है?

जब भी जन्म/ प्रश्न- कुंडली में "ए" ग्रह "बी" ग्रह की राशि में उपस्थित हो और साथ ही "बी" ग्रह भी "ए" ग्रह की राशि में उपस्थित हो तो, यह स्थिति उपरोक्त "ए" और "बी" ~ दो ग्रहों के बीच "राशि- परिवर्तन (साइन- एक्सचेंज)" के रूप में जानी जाती है।

** यह नियम नक्षत्र स्तर पर ग्रहों के बीच परिवर्तन (एक्सचेंज) में भी लागू किया जा सकता है, अर्थात~ यदि "ए" ग्रह "बी" ग्रह के नक्षत्र में उपस्थित हो और "बी" ग्रह "अ" ग्रह के नक्षत्र में उपस्थित हो तो, यह स्थिति उपरोक्त "ए" और "बी" ~ दो ग्रहों के बीच "नक्षत्र- परिवर्तन" के रूप में जानी जाती है।*

जब हम राशि- परिवर्तन पर गौर करते हैं, तो वहां दो ग्रह पस्पर राशि- परिवर्तन के कारण पुनः अपनी स्वयं के राशियों प्रभावी माने जाते हैं। उपरोक्त स्थिति में फलित- विचार कैसे करें? यह महत्वपूर्ण प्रश्न है. जैसा की पूर्व के अध्यायों में में स्पष्ट कर चूका हूँ कि नाड़ी- ज्योतिष में, भावों की तुलना में, प्रत्येक ग्रह के कारकत्व को अधिक महत्व दिया जाता है। इसलिए, राशि- परिवर्तन में शामिल ग्रहों के संबंधित कारकत्वों को विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। राशि- परिवर्तन दोनों ग्रहों के कारकत्वों के बीच पूर्व जन्म के कर्म- फल के कारण किसी महत्वपूर्ण जुड़ाव/ कर्म- बंधन को इंगित करता है। यह नियम को दो ग्रहों के बीच "नक्षत्र- परिवर्तन" के स्तर पर भी प्रभावी माना जाता है।

उदाहरण चार्टः 1

Astrological Researches Group

Pisces	Saturn Aries	Taurus	Gemini
Aquarius	Sign Exchange between Saturn & Mars: This situation indicates some strong Karmic bondage between Karktavas governed by Saturn & Mars.		Cancer
Mars Capricorn			Leo
Sagittarius	Scorpio	Libra	Virgo

Sign Exchange

राशि-परिवर्तन के विश्लेषण को विशेष ध्यान की आवश्यकता होती है। हम सभी जानते हैं कि, अपनी राशि में उपस्थित ग्रह सदैव शक्तिशाली और शुभस्थ माना जाता है।

राशि-परिवर्तन के कारण, जब दोनों ग्रहों को उनकी अपनी-अपनी राशि में स्थानांतरित माना जाता है ... तो ऐसी स्थिति में दोनों ग्रहों को स्वाभाविक तौर पर शक्तिशाली और शुभस्थ माना जाना चाहिए, लेकिन यहाँ सावधानी बरतने की जरूरत होती है, क्योंकि राशि-परिवर्तन के बाद वास्तविक रूप में यह जांचना आवश्यक है कि क्या दोनों ग्रहों को असल में शुभता किस स्तर तक प्राप्त हुई है।

उपरोक्त उदाहरण चार्ट 1 के अनुसार, मंगल और शनि के बीच राशि-परिवर्तन (साइन एक्सचेंज) है। मूल रूप से, शनि नीचस्थ हैं अर्थात मेष राशिस्थ है और मंगल ग्रह उच्चस्थ अर्थात मकर राशि में उपस्थित है. लेकिन, राशि-परिवर्तन के बाद, मंगल ग्रह मेष राशिस्थ और शनि ग्रह को मकर राशिस्थ माना जाएगा। अब राशि-परिवर्तन से पहले और बाद की ग्रह-स्थिति को पुनः ध्यान से समझने का प्रयास करें:

राशि-परिवर्तन से पहले की स्थिति:

* मंगल ~ उच्चस्थ

* शनि ~ नीचस्थ

राशि-परिवर्तन के बाद की स्थिति:

* मंगल ~ स्वराशिस्थ

* शनि ~ स्वराशिस्थ

ध्यान दें: राशि-परिवर्तन के बाद, हालांकि मंगल स्वराशिस्थ है लेकिन उच्चराशिस्थ का दर्जा खो देता है। दूसरी तरफ, राशि-परिवर्तन के बाद, शनि नीचराशिस्थ से स्वराशिस्थ होने के कारण शुभस्थ और मंगल ग्रह की तुलना में अधिक लाभान्वित माने जायेंगे। राशि-परिवर्तन के परिणाम को प्रभावित करने वाले अतिरिक्त कारक हैं:

- राशि-परिवर्तन नियम लागू करने से पहले, राशि-परिवर्तन में शामिल ग्रहों की पारस्परिक-उपस्थिति (Mutual Placement) की जांच करें। ग्रहों के बीच के दूरी (Distance between two Planets) को जानने के लिए यह उपयोगी होगा।
- राशि-परिवर्तन नियम लागू करने के पहले और बाद में ~ दोनों ग्रहों की युति में उपस्थित अन्य ग्रह/ग्रहों की जांच करें और सभी सूचनाएं अलग-अलग नोट करें।
- अब राशि-परिवर्तन नियम लागू करने के पहले और बाद में ~ दोनों ग्रहों की युति में उपस्थित अन्य ग्रह/ग्रहों के मैत्री-संबंध की जांच करें।
- राशि-परिवर्तन के बाद, आरम्भिक स्तर पर ... दोनों ग्रहों को शुभस्थ और शक्तिशाली माना जाएगा। अब अगले चरण का पालन करें। अब राशि-परिवर्तन से पहले और बाद की दोनों ग्रह-स्थिति को पुनः ध्यान से समझने का प्रयास करें:
- राशि-परिवर्तन से पहले की स्थिति:
- "ए" ग्रह ~ उच्चस्थ, नीचस्थ, शत्रु राशिस्थ अथवा मित्रराशिस्थ आदि।
- "बी" ग्रह ~ उच्चस्थ, नीचस्थ, शत्रु राशिस्थ अथवा मित्रराशिस्थ आदि।
- राशि-परिवर्तन के बाद की स्थिति:
- "ए" ग्रह~ स्वराशिस्थ (पूर्व-स्थिति की तुलना में लाभ/हानि)
- "बी" ग्रह ~ स्वराशिस्थ (पूर्व-स्थिति की तुलना में लाभ/हानि)

उदाहरण चार्ट: 2 (नीचे)

इस चार्ट में, सूर्य और मंगल के मध्य राशि-परिवर्तन है। सूर्य मेष राशि में उच्चस्थ है, जबकि मंगल मित्र राशि- सिंह में उपस्थित है। अब राशि-परिवर्तन के बाद, सूर्य अपनी राशि- सिंहस्थ माना जायगा, लेकिन यहाँ सूर्य उच्च पद खो देता है। लेकिन, इसी स्थिति

में मंगल को लाभ होता है, क्योंकि राशि-परिवर्तन के बाद मंगल स्वराशिस्थ माना जाता है।

Astrological Researches Group

Pisces	Aries Sun	Taurus	Gemini
Aquarius	Sign Exchange between Sun & Mars: Before Sign Exchange: Sun is in its Exaltation Sign, while Mars is in its Friend's Sign. After Sign Exchange: Sun goes to its own sign: Leo while Mars goes to its own Sign Aries i.e. after Sign Exchange, Sun looses its Exaltation Status while Mars gains as Mars goes into own Sign.		Cancer
Capricorn			Leo Mars
Sagittarius	Scorpio	Libra	Virgo

Sign Exchange

- राशि-परिवर्तन के बाद, सम्बन्धित दोनों राशियों में उपस्थित अन्य ग्रह/ग्रहों से नए ग्रह (स्वराशिस्थ आने वाले ग्रह) का तालमेल/परस्पर नया सम्बन्ध और उसका परिणाम।

उदाहरण चार्ट: 3

Astrological Researches Group

Pisces	Jupiter Sun Aries	Taurus	Gemini
Aquarius	Sign Exchange between Sun & Mars Planetary Condition before Sign exchange: Aries Sign: Jupiter + Sun Leo Sign: Rahu + Mars Planetary Condition after Sign Exchange: Aries Sign: Jupiter + Mars Leo Sign: Rahu + Sun		Cancer
Capricorn			Mars Leo Rahu
Sagittarius	Scorpio	Libra	Virgo

Sign Exchange

उपरोक्त उदाहरण चार्ट 3 में:

यदि हम राशि-परिवर्तन से पहले ग्रहों की स्थितियों को देखते हैं:
• मेष राशि: सूर्य (उच्चस्थ) + बृहस्पति (मित्रराशिस्थ)
• सिंह राशि: मंगल (मित्रराशिस्थ) + राहु (शत्रुराशिस्थ)

ध्यान देने योग्य:

- सूर्य उच्चस्थ है और युति में एक लाभकारी ग्रह~ बृहस्पति (मित्रराशिस्थ + सूर्य से भी मैत्री) है।
- मंगल मित्रराशिस्थ है और राहु से युति में है. मंगल की राहु से शत्रुता है।

अब, हम राशि-परिवर्तन के बाद में ग्रहों की स्थितियों को देखते हैं:

• मेष राशि: मंगल (स्वराशिस्थ) + बृहस्पति (मित्रराशिस्थ + मंगल से भी मैत्री)
• सिंह राशि: सूर्य (स्वराशिस्थ) + राहु (शत्रुराशिस्थ)

ध्यान देने योग्य: मंगल अपनी मेष राशि शुभ ग्रह: बृहस्पति से युति में मिलता है। इसलिए, बृहस्पति के शुभ प्रभाव के तहत मंगल शुभ और अधिक शक्तिशाली बना। दूसरी तरफ, सूर्य सिंह राशि में राहु से युति में शामिल होता है, लेकिन यहां सूर्य उच्च पद को खो देता है और राहु के प्रभाव में भी आता है।

याद करने के लिए महत्वपूर्ण बिंदु:

• हमेशा, जांच लें:
* राशि का दिशा
* ग्रह की गति की दिशा - मार्गी, वक्री या स्थिर
* ग्रह की गति और
* दो ग्रहों के बीच की दूरी।

नोट: सभी ग्रह सूर्य के चारों ओर अपने निर्धारित मार्ग में भ्रमण करते हैं और वे वस्तुतः एक-दूसरे को कभी नहीं मिलते हैं। लेकिन, जब हम धरती पर देखते हैं, ऐसा लगता है ... सभी ग्रह एक ही मार्ग पर भ्रमण कर रहे हैं, लेकिन यह केवल दृश्य-प्रभाव है। उपरोक्त विचारणीय स्थितियों से परिणाम प्रभावित होते है।

जैसे, ऊपर उदाहरण चार्ट में:

*मान लीजिए, राहु 14 डिग्री पर और मंगल 9 डिग्री पर है .... यहां राहु और मंगल~ एक-दूसरे को देखते है (दृष्टि सम्बध बन रहा है)। इस तरह, मंगल और राहु दोनों एक-दूसरे को प्रभावित करेंगे।

*मान लीजिए, उपरोक्त स्थति में यदि मंगल 24 डिग्री पर है ... तो, राहु पर मंगल का कोई भी प्रभाव नहीं होगा अथवा परस्पर युति के कारण न्यूनतम प्रभाव माना जायेगा।

*मान लीजिए, सूर्य 28 डिग्री पर है और बृहस्पति 19 डिग्री पर है ... ऐसी स्थिति में सूर्य-बृहस्पति की युति में सूर्य ग्रह अधिक लाभान्वित होंगे।

हालांकि राशि परिवर्तन के बाद, सूर्य उच्चपद से नीचे आये है, लेकिन राहु (14 डिग्री) पर, जबकि सूर्य 28 डिग्री पर है। क्योंकि सूर्य और राहु दोनों एक-दूसरे से विपरीत दिशाओं में जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में सूर्य पर राहु का दुष्प्रभाव अत्यंत न्यून ही माना जायेगा।

मान लीजिए कि उपरोक्त उदाहरण में यदि सूर्य 9 डिग्री है, तो साइन-एक्सचेंज के बाद, सूर्य पर राहु के दुष्प्रभाव का असर पड़ सकता है।

• राशि-परिवर्तन में शामिल दोनों ग्रहों और उनके द्वारा अधिष्ठित राशियों की प्रकृति-तत्व की जांच करें, अर्थात् अग्नि, वायु, जल या पृथ्वी।
• राशि-परिवर्तन में शामिल दोनों ग्रहों और उनके द्वारा अधिष्ठित राशियों की मूलत्रिकोण आदि प्रकृति की जांच करें।

अध्याय: 6 ~ प्रगति (प्रोग्रेशन - Progression) ©

पहले अध्यायों में, नाड़ी-ज्योतिष के सन्दर्भ में अनेक महत्वपूर्ण आधारभूत बातों पर चर्चा हुई है। उसी निरंतरता में, इस अध्याय में नाड़ी-ज्योतिष के एक और बहुत महत्वपूर्ण और मौलिक विषय ~ "प्रगति (प्रोग्रेशन-Progression)" पर मैं अपने शोधात्मक विचार साँझा करूँगा।

प्रगति (प्रोग्रेशन - Progresion) क्या है?

"प्रगति को विकास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है", खासकर धीरे-धीरे या चरणों में।

जड़ और चेतन रूपी प्रकृति सदैव परिवर्तनशील रहती है जड़-प्रकृति में बदलाव बेहद धीरे और चेतन-प्रकृति में बदलाव अत्यंत शीघ्र अनुभूत होते है। जीव को चेतन-प्रकृति का स्वरुप माना जाता है। नाड़ी-ज्योतिष में मनुष्यरूपी जीव के विकास-क्रम को कुंडली, उसमे उपस्थित ग्रहों और प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित विभिन्न कारकत्वों के माध्यम से समझने हेतु ग्रहों की **"चक्रीय-प्रगति (Cyclic-Progression)"** का उपयोग किया जाता है।

*** यह नियम भी सभी ग्रहों पर लागू किया जा सकता है, इस पर अग्रिम पुस्तकों *और* कक्षाओं में चर्चा की जाएगी।**

जीवन के विकास-क्रम को नाड़ी-ज्योतिषीय दृष्टिकोण से समझने हेतु मैं सर्वप्रथम जीव-कारक ग्रहों के प्रोग्रेशन के विषय में अपने शोधात्मक विचार साँझा करूँगा, क्योंकि दीर्घायु-जीवन के बिना, सभी गणनाएं अनुपयोगी होगी।

नाड़ी-ज्योतिष के अनुसार, बृहस्पति ग्रह को पुरुष-जीव कारक और शुक्र ग्रह को स्त्री-जीव कारक माना जाता है।

इसका अर्थ है, नाड़ी-ज्योतिषीय-पद्धति के अनुसार पुरुष-जातक से संबंधित सभी मामलों का विश्लेषण बृहस्पति के द्वारा किया जाना चाहिए। इसी तरह, नाड़ी-ज्योतिषीय-पद्धति के अनुसार स्त्री-जातक से संबंधित सभी मामलों का विश्लेषण शुक्र-ग्रह के द्वारा किया जाना चाहिए। यह नाड़ी ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांत है।

अब प्रश्न उठता है, जन्म-कुंडली के माध्यम से व्यावहारिक विश्लेषण में जीव-कारक ग्रहों के प्रोग्रेशन का तार्किक उपयोग कैसे करें?

किसी भी ग्रह का प्रोग्रेशन का दो स्तरों पर विश्लेषण किया जाना चाहिए, जैसा कि:

1. वृहत स्तर (Macro Level) &

२. सूक्ष्म स्तर (Micro Level)

प्रत्येक ग्रह सम्पूर्ण राशिमंडल का एक चक्र एक निश्चित अवधि में पूर्ण करता है।

1. वृहत स्तर (Macro Level): नाड़ी ज्योतिष के मूल सिद्धांतों के अनुसार, प्रत्येक ग्रह के प्रोग्रेशन *की अवधि (प्रति चक्र प्रति 30 अंश)" उस ग्रह-विशेष द्वारा राशिमंडल के एक भ्रमण के औसत समय के बराबर होती है। यह "वृहत-* प्रोग्रेशन *(Macro Progression)" के रूप में जाना जाता है. उदाहरण के लिए, बृहस्पति पूरे राशिमंडल का एक चक्र (ट्रांजिट) पूरा करने के लिए 12 साल (लगभग) लेता है। इसलिए, चक्र के लिए बृहस्पति की प्रगति 12 वर्ष की अवधि है। नोट: शुक्र स्त्री-जीव का कारक ग्रह है और इसकी "वृहत-* प्रोग्रेशन *अवधि प्रति चक्र" 12 वर्ष की अवधि ही मानी जाती है। सामान्यतः जीव कारक ग्रह- "बृहस्पति और शुक्र", कर्म कारक ग्रह- "शनि", काल कारक ग्रह- "राहु" और मोक्ष कारक ग्रह- "केतु" के* प्रोग्रेशन *(Progression) का विचार किया जाता है. इनके अतिरिक्त, सूर्य, मंगल और बुध ग्रह के प्रोग्रेशन का भी विचार किया जाता है।*

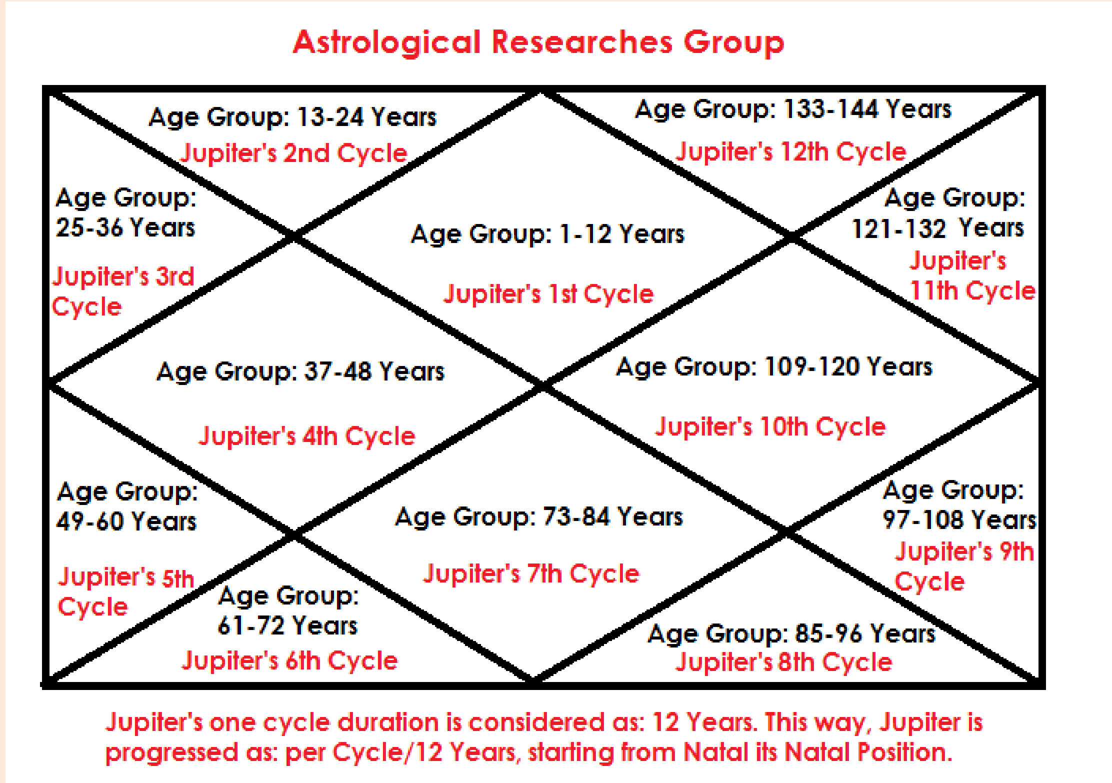
- ***जीव कारक ग्रहों~ बृहस्पति और शुक्र के प्रोग्रेशन की अवधि (i.e Duration of One Cycle of Progression) के एक चक्र (प्रति 30 अंश) का मान 12 वर्ष माना जाता है।***

- ***कर्म-कारक शनि ग्रह के प्रोग्रेशन की अवधि (i.e Duration of One Cycle of Progression) के एक चक्र (प्रति 30 अंश) का मान 30 वर्ष माना जाता है, जोकि शनि ग्रह द्वारा राशिमंडल के एक भ्रमण के लिए लिये जाने वाले समय - 30 वर्ष की औसत अवधि के बराबर है।***

- ***काल-कारक राहु ग्रह और मोक्ष-कारक केतु-ग्रह की अवधि (i.e Duration of One Cycle of Progression) के एक चक्र (प्रति 30 अंश) का मान 18 वर्ष माना जाता है, जोकि राहु और केतु ग्रह द्वारा राशिमंडल के एक भ्रमण के लिए लिये जाने वाले समय- 18 वर्ष की औसत अवधि के बराबर है***

- ***सूर्य, चंद्र, मंगल और बुध के प्रोग्रेशन का भी विचार किया जाता है. इन सभी के प्रोग्रेशन की अवधि 12 वर्ष (प्रति- चक्र प्रति 30 अंश) की मानी जाती है.***

उदाहरण चार्ट देखें ~ 1



2. *सूक्ष्म स्तर (Micro Level)*: अब, अगला प्रश्न उठता है कि, किसी राशि-विशेष में ***प्रोग्रेशन*** के दौरान जीव-कारक ग्रह 12 साल की अवधि के लिए ***प्रोग्रेशन*** करेगा, तो अन्य राशियों/भावों से सम्बंधित फलित का विचार कैसे होगा? यहां, "**सूक्ष्म *प्रोग्रेशन* विधि (माइक्रो प्रोग्रेशन मेथड)**" का उपयोग करना चाहिए। इस पद्धति के तहत, जीव-कारक ग्रह अपने 12 साल की प्रगति की अवधि सम्बन्धित चक्र के आरम्भ स्थल से आगे की अलग-अलग राशियों/भावों में प्रति एक वर्ष 2 अंश 30 कला प्रोग्रेशन करेगा।

सावधानी: **"ग्रह-गोचर" और "ग्रह- प्रोग्रेशन" दोनों अलग-अलग विधाएँ हैं**।

नीचे चार्ट ~ 2 देखें:


Astrological Researches Group
Micro Progressio: 2nd Year
Natal
Jupiter in Aries
Sign @ 0 Degree
Micro Progressio: 12th Year
Micro
Progressio:
3rd Year
Micro Progressio: 1st Year
Macro Progression: Duration: 12 Years
Jupiter's 1st Cycle
Micro
Progressio:
11th Year
Micro Progressio: 4th Year
Micro Progressio: 10th Year
Micro
Progressio:
5th Year
Micro Progressio: 7th Year
Micro
Progressio:
9th Year
Micro Progressio: 6th Year
Micro Progressio: 8th Year
Jupiter's one cycle duration is considered as: 12 Years. This way, Jupiter is progressed as: per Cycle/12 Years, starting from Natal its Natal Position.

अध्याय: 7 ~ शनि का प्रोग्रेशन (Saturnine Progression) ©

पिछले अध्याय में, मैंने जीव-कारक ग्रहों~ बृहस्पति और शुक्र के प्रोग्रेशन पर विचार साझा किए हैं। जीव-कारक ग्रहों का प्रोग्रेशन मूलतः आयु और जीवन के सुख-दुःख आदि स्थितियों से संबंधित है।

पौराणिक हिंदू कथाओं के अनुसार, जीव कर्म करता है और कर्म के फल के अनुसार जीव की आगे गति तय होती है। जैसा कि पहले से ही बताया गया है कि ~ शनि सभी प्रकार के कर्मों से सम्बन्धित कारक-ग्रह है। कर्म और कर्मफल के संभावित परिणामों के बारे में समझने के लिए हमें शनि-ग्रह के प्रोग्रेशन की आवश्यकता होती है। राशि-चक्र का एक भ्रमण पूरा करने के लिए शनि-ग्रह को 30 वर्ष (औसत) लेता है। प्रोग्रेशन की अवधि के नियम के अनुसार, शनि-ग्रह के प्रोग्रेशन की अवधि ~ 30 वर्ष प्रति 30 अंश (राशि/भाव आदि) होती है।

अब सवाल उठता है, जन्म-कुंडली विश्लेषण हेतु शनि ग्रह के प्रोग्रेशन का तार्किक उपयोग कैसे करें?

शनि ग्रह के प्रोग्रेशन का दो स्तरों पर विश्लेषण किया जाना चाहिए:

1. वृहत स्तर (Macro Level Progression) और

2. सूक्ष्म स्तर (Micro Level Progression)

शनि ग्रह द्वारा पूरे राशिमंडल का एक बार भ्रमण पूरा करने के लिए 30 साल (औसत) लगते हैं। नाड़ी ज्योतिष के मूल सिद्धांतों के अनुसार, शनि ग्रह के प्रोग्रेशन की अवधि भी 30 वर्ष-प्रति चक्र मानी गई है। यह "वृहत स्तर का प्रोग्रेशन" माना जाता है, जिसके अंतर्गत प्रोग्रेशन के दौरान शनि ग्रह जन्मकालिक अधिष्ठित राशि-अंश-कलादि से आगे प्रत्येक चक्र में 30 अंश के हिसाब से प्रति 30 वर्ष में आगे बढ़ता है. प्रथम चक्र जन्मदिन (प्रथम वर्ष) से 30 वर्ष की आयु तक, दूसरा चक्र 31 वें वर्ष से 60 वें वर्ष तक, तीसरा चक्र 61वें वर्ष से 90 वर्ष की आयु तक और आगे इसी तरह लागू होगा। प्रथम चक्र जन्मकालिक अधिष्ठित राशि/अंश-कलादि से आरम्भ होकर अगले ३० अंश तक प्रभावी रहता है। दूसरा-चक्र प्रथम-चक्र के समाप्ति अंश-कलादि से आरम्भ होकर अगले ३० अंश तक प्रभावी रहता है. इसी प्रकार आगे विचार करें।

अब, अगला सवाल उठता है कि, प्रोग्रेशन के प्रत्येक चक्र के दौरान शनि ग्रह प्रत्येक 30 अंश/ राशि/भाव में 30 वर्षों की अवधि के लिए प्रोग्रेस (Progress) करेगा। तो ऐसी स्थिति में अन्य राशियों/भावों के सन्दर्भ में शनि ग्रह के प्रोग्रेशन का फलित विचार कैसे करें? यहां, "सूक्ष्म स्तर विधि" (माइक्रो प्रोग्रेशन मेथड)" का उपयोग करना चाहिए। "सूक्ष्म स्तर विधि" (माइक्रो प्रोग्रेशन मेथड)" पुनः दो प्रकार का है:

1. इस पद्धति के तहत, कर्म-कारक ग्रह शनि विचारणीय-चक्र (Cycle under consideration) के आरम्भ-स्थल से आगे के 30 अंश ~ प्रति एक वर्ष - एक अंश के हिसाब से 30 वर्ष तक प्रोग्रेस करेगा।

2. इस पद्धति के तहत, कर्म-कारक ग्रह शनि अपने ३० वर्ष के प्रोग्रेशन के दौरान विचारणीय-चक्र के आरम्भ-स्थल से आगे की अलग-अलग राशियों/भावों में प्रति अढ़ाई वर्ष के हिसाब से प्रोग्रेस करेगा।

उदाहरण चार्ट: 1

Astrological Researches Group
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Natal Saturn in Aries Sign @ 0 Deg
Micro Progression Duration: 2 and 1/2 Year
Macro Progression Duration of Saturn: 30 Years per Cycle
Saturn's 1st Cycle
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Micro Progression: Next 2 & 1/2 Years
Saturnine Macro Progression duration: 30 Years per Sign
Saturnine Micro Progression duration: 2& 1/2 Years per Sign i.e. Similar to Transit



अध्याय: 8 ~ राहु का प्रोग्रेशन ©

पिछले अध्यायों में, मैंने बृहस्पति, शुक्र और शनि ग्रह के प्रोग्रेशन के संदर्भ में अपने शोधात्मक विचार साँझा किये है। इस अध्याय में, मैं राहु के प्रोग्रेशन से सम्बन्धित अपने शोधात्मक विचार साझा करूंगा।

राहु ग्रह नाड़ी-ज्योतिष में काल-पुरुष या काल के रूप में जाना जाता है। एक तरफ, राहु वृद्धि का कारक है; दूसरी तरफ जीव के लिए काल (दैहिक- मृत्यु) कारक भी होता है। जीवन और मृत्यु चक्र के अनुसार अगर जन्म होता है, तो मौत भी होती है। बृहस्पति (जीव~जीवन) और राहु (काल~मृत्यु) का संबंध "जीवन और मृत्यु चक्र" में अंतर्निहित है।

राहु सभी प्रकार के सांसारिक कार्य, उनमे रूचि और विकास, और अंततः पुनः "जीवन और मृत्यु चक्र" में उलझाए रखता है। अब सवाल उठता है, कुंडली-विश्लेषण में राहु के प्रोग्रेशन का तार्किक उपयोग कैसे करें?

अन्य ग्रहों की भांति ही, राहु-ग्रह के प्रोग्रेशन का दो स्तरों पर विश्लेषण करना चाहिए:

1. वृहत स्तर (Macro Level Progression) &

2. सूक्ष्म स्तर (Micro Level Progression)

नाड़ी ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार, ग्रह-विशेष के प्रोग्रेशन के प्रत्येक चक्र की अवधि ग्रह-विशेष द्वारा पूरे राशिमंडल के एक भ्रमण को पूरा करने के लिए गए समय (वर्ष आदि) के औसत मान के बराबर होती है।

राहु ग्रह पूरे राशिमंडल का एक भ्रमण 18 वर्ष (लगभग) लेते हैं। इसलिए, राहु के प्रोग्रेशन के प्रत्येक चक्र की अवधि 18 वर्ष होती है। इसे राहु के "वृहत स्तर के प्रोग्रेशन" के रूप में जाना जाता है। राहु ग्रह के प्रोग्रेशन का प्रथम चक्र की अवधि~ जन्म-दिन (प्रथम वर्ष) से 18 वें वर्ष तक होती है। दूसरा चक्र 19वें वर्ष से 36 वें वर्ष तक प्रभावी रहता है। तीसरा चक्र 37वें वर्ष से 54 वें वर्ष प्रभावी रहता है। इसी प्रकार आगे विचार करें।

अब राहु ग्रह प्रोग्रेशन के विषय में एक नियम पर ध्यान दें:

राहु और केतु ~ ऐसे दो ग्रह है, जो सदैव वक्री ही रहते है। राहु और केतु का प्रोग्रेशन भी वक्री अर्थात विपरीत ही विचारणीय होता है।

उदाहरण के लिए, जन्मकालिक राहु मेष राशि में ५ अंश पर उपस्थित है। उपरोक्त स्थिति में राहु के प्रोग्रेशन का प्रथम चक्र मेष राशि में ५ अंश से आरम्भ होगा और विपरीत दिशा में अर्थात मीन राशि के 5 अंश पर पूर्ण होगा। राहु के प्रोग्रेशन का दूसरा चक्र मीन राशि में 5 अंश से आरम्भ होगा और विपरीत दिशा में अर्थात कुम्भ राशि के 5 अंश पर पूर्ण होगा। इसी प्रकार आगे विचार करें।

अब, अगला प्रश्न, प्रत्येक चक्र के दौरान राहु ग्रह मात्र ३० अंश प्रोग्रेस करेगा। इस अवधि के दौरान अन्य राशियों/भावों से सन्दर्भ में फलित विचार कैसे किया जाये? यहाँ "सूक्ष्म स्तर विधि" का उपयोग करना चाहिए।

इस विधि के तहत, काल कारक राहु का प्रोग्रेशन दो प्रकार से विचारणीय होता है:

1. उसी राशि/भाव/३० अंश के भीतर:

18 वर्ष की अवधि के लिए प्रत्येक चक्र के भीतर (या 30 अंश का क्षेत्र) में राहु ग्रह को प्रति वर्ष ~ 1 अंश 40 कला प्रोग्रेस किया जाता है, अर्थात 1 अंश ४० कला * 18 = 30 अंश। यहां विशेष ध्यान दें~ चक्र-विशेष (या वर्तमान समय में आयु के अनुसार में विचारणीय चक्र) से सम्बन्धित ३० अंश के क्षेत्र (राशि/भाव) में मौजूद जन्मकालिक ग्रह/ग्रहों से प्रोग्रेशन फलित हेतु विशेषतः विचारणीय होता है।

2. अन्य राशियों/भावों के लिए: राहु की चक्र-विशेष (या वर्तमान समय में आयु के अनुसार विचारणीय चक्र) से आगे प्रत्येक ३० अंश (या राशि/भाव) को डेढ़ वर्ष की समयावधि में प्रोग्रेस करता है अर्थात 1 और ½ वर्ष प्रति ३० अंश (या राशि/भाव) * १२ (राशियां/भाव) = 18 वर्ष।

इस विधि का इस्तेमाल केवल अच्छे से अभ्यास के बाद ही किया जाना चाहिए।

उदाहरण चार्ट: 1

राहु ग्रह का वृहत और सूक्ष्म स्तर पर प्रोग्रेशन-विचार

Astrological Researches Group

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Natal Rahu in Aries sign @ 30 Deg
Micro Progression duration: 1 &1/2 Year
Macro Progression duration of Rahu: 18 Years
Rahu's 1st Cycle

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Micro Progression Duration: 1 & 1/2 Years

Rahu's Progression: Macro (18 years duration per Cycle) & Micro (1&1/2 Years per Sign) Level

अध्याय: 8 ~ केतु ग्रह का प्रोग्रेशन ©

पिछले अध्यायों में, मैंने बृहस्पति, शुक्र, शनि और राहु ग्रह के प्रोग्रेशन के संदर्भ में अपने शोधात्मक विचार साँझा किये है। इस अध्याय में, मैं केतु ग्रह के प्रोग्रेशन से सम्बन्धित अपने शोधात्मक विचार साझा करूंगा।

केतु ग्रह नाड़ी-ज्योतिष में मोक्ष और सांसारिक कार्यों में बाधा-कारक के रूप में जाना जाता है। जीवन और मृत्यु चक्र के अनुसार अगर जन्म होता है, तो मृत्यु भी होती है। बृहस्पति (जीव~जीवन) और राहु (काल~मृत्यु) का संबंध "जीवन और मृत्यु चक्र" में अंतर्निहित है। यहाँ राहु पुनर्जन्म के भेद से सभी प्रकार के सांसारिक कर्म, उनमे रूचि और विकास, और अंतत: पुनः "जीवन और मृत्यु चक्र" में उलझाएं रखता है। यहाँ ध्यान योग्य बात यह है कि राहु सांसारिक-कर्म-बंधन "ऋण" के रूप में एकत्रित कराता जाता है और साथ ही "दैहिक मृत्यु" का बोधक भी है।

लेकिन दूसरी तरफ केतु सांसारिक-कर्म-बंधन रूपी "ऋण" से मुक्ति उपरांत मोक्ष कारक होता है और यह तभी सम्भव हो पायेगा जब कर्म-कारक शनि ग्रह का केतु से सम्बन्ध बने। अब यहाँ पुनः ध्यान देने की जरूरत है: शनि और केतु की जन्मकालिक/तात्कालिक परस्पर-स्थिति (म्यूच्यूअल प्लेसमेंट) बेहद महत्वपूर्ण होती है, यहां मोक्ष हेतु शनि और केतु का एक दूसरे की तरफ दृष्टि होना आवश्यक शर्त है, जबकि शनि और केतु का एक दूसरे की तरफ दृष्टि होना सांसारिक कार्यों- नौकरी/व्यवसाय आदि में बाधायें या परेशानी कारक हो सकता है। यदि शनि और केतु का परस्पर दृष्टि सम्बन्ध न हो तो आरम्भिक परिश्रम के बाद स्वतंत्र प्रकृति के कार्य/व्यवसाय में अधिक सफलता मिलती है।

जीव (बृहस्पति) > काल (राहु)

कर्म (शनि) > मोक्ष (केतु)

सवाल उठता है, कुंडली-विश्लेषण में केतु ग्रह के प्रोग्रेशन का तार्किक उपयोग कैसे करें? अन्य ग्रहों की भांति ही, केतु-ग्रह के प्रोग्रेशन का दो स्तरों पर विश्लेषण करना चाहिए:

1. वृहत स्तर (Macro Level Progression) &

2. सूक्ष्म स्तर (Micro Level Progression)

नाड़ी-ज्योतिष के मूलभूत सिद्धांतों के अनुसार, ग्रह-विशेष के प्रोग्रेशन के प्रत्येक-चक्र की अवधि ग्रह-विशेष द्वारा पूरे राशिमंडल के एक भ्रमण को पूरा करने के लिए गए समय (वर्ष आदि) के औसत मान के बराबर होती है।

केतु ग्रह पूरे राशिमंडल का एक भ्रमण 18 वर्ष (लगभग) लेता है। इसलिए, केतु के प्रोग्रेशन के प्रत्येक चक्र की अवधि 18 वर्ष होती है। इसे केतु के "वृहत स्तर के प्रोग्रेशन" के रूप में जाना जाता है। केतु ग्रह के प्रोग्रेशन का प्रथम चक्र की अवधि~ जन्म-दिन (प्रथम वर्ष) से 18 वें वर्ष तक होती है। दूसरा चक्र 19वें वर्ष से 36 वें वर्ष तक प्रभावी रहता है। तीसरा चक्र 37वें वर्ष से 54 वें वर्ष प्रभावी रहता है। इसी प्रकार आगे विचार करें।

अब केतु ग्रह प्रोग्रेशन के विषय में एक नियम पर ध्यान दें:

राहु और केतु ~ ऐसे दो ग्रह है जो सदैव वक्री ही रहते है। राहु और केतु का प्रोग्रेशन भी वक्री अर्थात विपरीत ही विचारणीय होता है।

उदाहरण के लिए, जन्मकालिक केतु मेष राशि में ५ अंश पर उपस्थित है। उपरोक्त स्थिति में केतु के प्रोग्रेशन का प्रथम चक्र मेष राशि में ५ अंश से आरम्भ होगा और विपरीत दिशा में अर्थात मीन राशि के 5 अंश पर पूर्ण होगा। केतु के प्रोग्रेशन का दूसरा चक्र मीन राशि में 5 अंश से आरम्भ होगा और विपरीत दिशा में अर्थात कुम्भ राशि के 5 अंश पर पूर्ण होगा। इसी प्रकार आगे विचार करें।

अब, अगला प्रश्न, प्रत्येक चक्र के दौरान केतु ग्रह मात्र ३० अंश प्रोग्रेस करेगा। इस अवधि के दौरान अन्य राशियों/भावों से सन्दर्भ में फलित विचार कैसे किया जाये? यहाँ "सूक्ष्म स्तर विधि" का उपयोग करना चाहिए।

इस विधि के तहत, काल कारक केतु का प्रोग्रेशन दो प्रकार से विचारणीय होता है:

1. उसी राशि/भाव/३० अंश के भीतर:

18 वर्ष की अवधि के लिए प्रत्येक चक्र के भीतर (या 30 अंश का क्षेत्र) में केतु ग्रह को प्रति वर्ष ~ 1 अंश 40 कला प्रोग्रेस किया जाता है, अर्थात 1 अंश ४० कला * 18 = 30 अंश. यहां विशेष ध्यान दें~ चक्र-विशेष (या वर्तमान समय में आयु के अनुसार में विचारणीय चक्र) से सम्बन्धित ३० अंश के क्षेत्र (राशि/भाव) में मौजूद जन्मकालिक ग्रह/ग्रहों से प्रोग्रेशन फलित हेतु विशेषतः विचारणीय होता है।

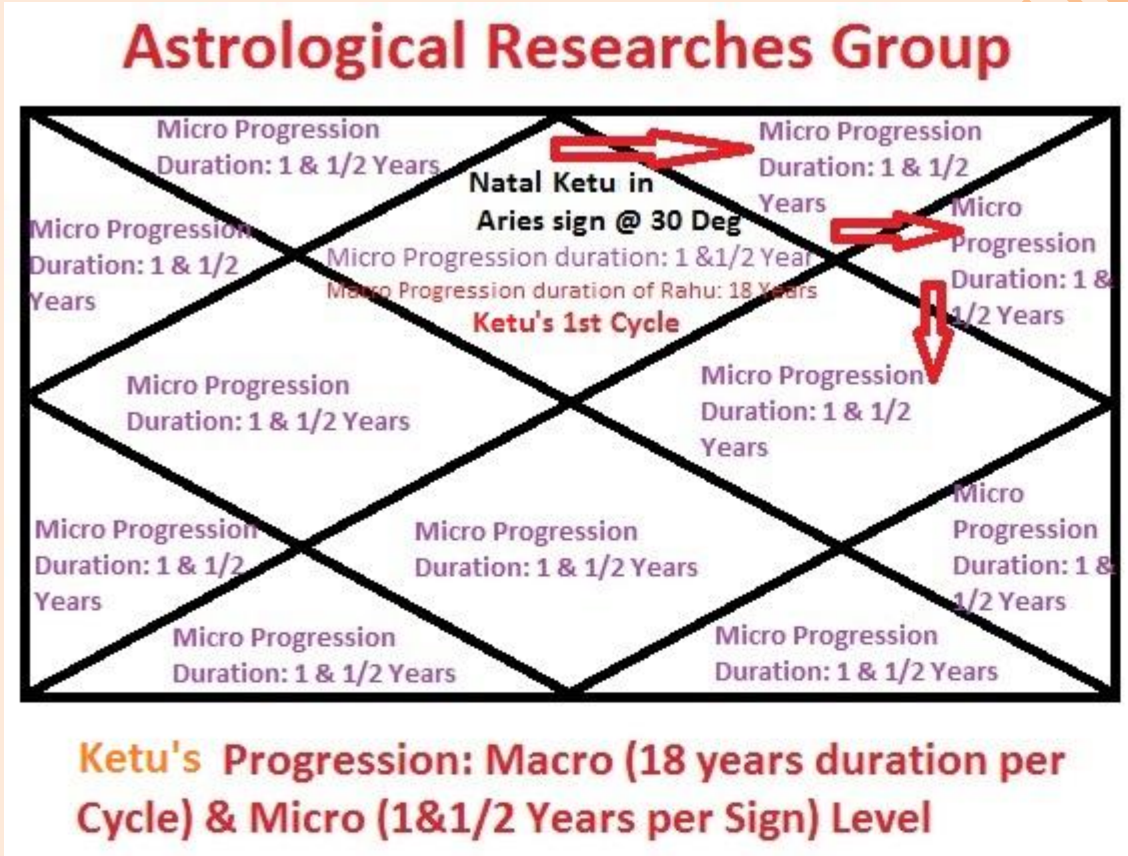
2. अन्य राशियों/भावों के लिए: केतु की चक्र-विशेष (या वर्तमान समय में आयु के अनुसार विचारणीय चक्र) से आगे प्रत्येक ३० अंश (या राशि/भाव) को डेढ़ वर्ष की समयावधि में

प्रोग्रेस करता है अर्थात 1 और ½ वर्ष प्रति ३० अंश (या राशि/भाव) * १२ (राशियां/भाव) = 18 वर्ष।

इस विधि का इस्तेमाल केवल अच्छे से अभ्यास के बाद ही किया जाना चाहिए।

उदाहरण चार्ट: 1

केतु ग्रह का वृहत और सूक्ष्म स्तर पर प्रोग्रेशन-विचार:



ग्रहों के कारकत्वों के माध्यम से नाड़ी-ज्योतिष को जानने के लिए ये मूल नियम हैं। उम्मीद, पाठकों को लाभ होगा।

ॐ श्रीकृष्णार्पणमस्तु।

कुछ उपयोगी लिंक:

Nadi Astrology (नाड़ीज्योतिष): Astrological Researches
https://www.facebook.com/groups/266535793479406/

Astrological Researches Group
https://www.facebook.com/AstrologicalResearchesGroup/

Astrological Researches
https://www.facebook.com/groups/smmmjvsrk/

You Tube Channel

Astrological Researches Group

https://www.youtube.com/channel/UCdfaadpzj6HfmG6FKqawxtA

Whatsapp Groups (Contact for further details):

Free Nadi Astrology Group: Nadi Astrology: A R Group

https://chat.whatsapp.com/GiWqlN8sxwl4gwec6ynORa

आने वाले प्रकाशनों में निम्नलिखित बिंदुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया जाएगा:

परिवार:

- **जातक के भाई-बहनों सम्बन्धित जानकारी?**
- **विवाह का समय, विलंब, विवाह का वादा**
- **गर्भपात**
- **बच्चे का जन्म**
- **तलाक/पृथक्करण के लिए ग्रह-योग**
- **दूसरा विवाह**
- **परिवार में विवाद**
- **भाइयों के बीच प्रतिद्वंद्विता**
- **वैध्वय**
- **नाडी शैली में कुंडली से मिलान करना**
- **मुहूर्त**
- **विभिन्न उपाय**

स्वास्थ्य

- **दिल के दौरे के लिए संयोजन**
- **मधुमेह**
- **पथरी**
- **मस्तिष्क में रक्त स्राव**
- **गंजापन**
- **त्वचा की समस्या**
- **दुर्घटनाओं**

- जीवन और मृत्यु की स्थिति
- विकलांग के लिए योग
- कैंसर
- फोडा
- गाइनेक समस्याएं
- साइनस / ईएनटी
- आंखें
- थायराइड
- हकलाने
- यौन दुर्बलता
- नी-रिप्लेसमेंट

वित्त

- नौकरी या व्यवसाय
- कमाई शुरू करने के लिए आयु
- भाग्य- उदय?
- क्या धन का वादा है?
- विवाह के बाद भाग्य- उदय ?
- नौकरी / करियर में / स्थान-परिवर्तन ?
- गुप्त खज़ाना
- लॉटरी
- पत्नी की तरफ से मदद

सामान्य:

- **इष्ट-देवत्ता / कुल-देवता**
- **काला जादू**
- **ज्योतिष सीखने के लिए सहायक प्रमुख ग्रह-योग**
- **काल सर्प दोष**
- **पितृ-दोष**
- **पिछले जीवन से शाप**
- **लग्न का महत्व और उपयोग**